न =नहीं; **माम्** =मेरे; **दुष्कृतिनः** =दुष्ट; **मूढाः** =मूर्ख; **प्रपद्यन्ते** =शरणागत होते; **नराधमाः** =मनुष्यों में अधम; **मायया** =माया द्वारा; **अपहृत ज्ञानाः** =हरे हुए ज्ञान वाले; **आसुरम्** =आसुरी; **भावम्** =स्वभाव को; **आश्रिताः** =धारण किए हुए।

अनुवाद

माया द्वारा हरे हुए ज्ञान वाले, आसुरी स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में अधम और पापकर्म करने वाले मूढ़ मेरी शरण नहीं लेते ।।१५।।

तात्पर्य

श्रीमद्भगवद्गीता में कथन है कि भगवान् श्रीकृष्ण के चरणाविन्द की शरण में जाने मात्र से जीव माया के कठोर नियमों को लाँघ सकता है। इस पर एक जिज्ञासा उठती है। क्या कारण है कि विद्वान् दार्शनिक, वैज्ञानिक, व्यापारी, प्रशासक तथा लोगों के अन्य सब अग्रणी सर्वशक्तिसम्पन्न भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों में नहीं जाते ? मानवता के पथप्रदर्शक नाना प्रकार की बड़ी-बडी योजना बनाकर अनेक वर्षों और जन्मान्तरों तक अध्यवसायपूर्वक मुक्ति के लिए उद्यम करते रहते हैं। परन्तु जब भगवान् के चरणारविन्द में प्रपन्न होने मात्र से मुक्ति सुलभ हो सकती है, तो क्यों नहीं ये बुद्धिमान् और परिश्रमी लोग इस सुगम पथ को अंगीकार करते ?

गीता में इस जिज्ञासा का स्पष्ट उत्तर उपलब्ध है। समाज के सच्चे विद्वान् अग्रणी— ब्रह्मा, शिव, कपिल, कुमार, मनु, व्यास, देवल, असित, जनक, प्रह्लाद, बलि, मध्वाचार्य, रामानुजाचार्य, श्रीचैतन्य महाप्रभु तथा अन्य श्रद्धालु दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक, शिक्षक आदि सर्वशक्तिमान् परमेश्वर श्रीकृष्ण के चरणकमलों की शरण अवश्य लेते हैं। परन्तु जो वास्तव में दार्शनिक, वैज्ञानिक, शिक्षक, प्रशासक आदि नहीं हैं, केवल लौकिक लाभ के लिए ऐसी योग्यताओं से युक्त होने का कपट भर करते हैं, वे भगवत्-विधान अथवा भागवतपथ को स्वीकार नहीं कर सकते। भगवान् के सम्बन्ध में वे कुछ भी नहीं जानते, इसलिए सांसारिक योजनाएँ ही बनाते रहते है। वे भवरोग की समस्याओं का उपचार तो कर नहीं पाते, अपितु उन्हें और भी अधिक जटिल बना देते हैं। शक्तिशाली मायाशक्ति इन अनीश्वरवादियों की योजनाओं का प्रतिकार कर 'योजना आयोगों' के ज्ञान को ध्वस्त कर देती है।

अनीश्वरवादी योजनाकारों को इस श्लोक में **दुष्कृतिन** अर्थात् पापात्मा कहा गया है। **कृतिन** शब्द का अर्थ पुण्यात्मा होता है। नास्तिक योजनाकार भी कभी-कभी अत्यन्त बुद्धिमान् एवं श्लाध्य सिद्ध होता है, क्योंकि अच्छी-बुरी किसी भी बड़ी योजना के लिए बुद्धि चाहिए। पर परमेश्वर की योजना के विरोध में अपनी मति का दुरुपयोग करने के कारण अनीश्वरवादी योजनाकार **दुष्कृतिन** है। भाव यह है कि उसकी बुद्धि और चेष्टा उल्टी दिशा की ओर हैं।

गीता में स्पष्ट कहा है कि माया-शक्ति पूर्णरूप से परमेश्वर श्रीकृष्ण के नियन्त्रण में कार्य करती है; उसका कोई स्वतन्त्र प्रभुत्व नहीं है। जिस प्रकार छाया पदार्थ का अनुसरण करती है, माया भी वैसे ही कार्य करती है। फिर भी, माया-शक्ति